पर्यावरण अध्ययन एवं एकीकृत एप्रोच

कविता शर्मा*

प्रस्तावना

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ने का समर्थन करती है। पर्यावरण अध्ययन (Environmental Studies)के विषय में तो यह पूरी तरह से सही है क्योंकि पर्यावरण अध्ययन का ध्येय, मात्र ज्ञान का अर्जन या पर्यावरण के प्रति सचेतता ही नहीं, बल्कि इससे जुड़े सामाजिक; प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक मुद्दों पर एक संपूर्ण रूप में समझ बनाते हुए आवश्यक कौशलों के विकास द्वारा पर्यावरण संबंधी समस्याओं का समाधान करना भी है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986 (पुर्नविकसित-1992) में 'पर्यावरण के बचाव' को केंद्र में रखकर ही राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के विकास की बात कही गई है अर्थात् यह संपूर्ण शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है। राष्ट्रीय स्तर पर एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित सभी पाठ्यचर्याओं में इस पर ध्यान देने पर विशेष बल दिया गया है। वर्ष 1988 की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में प्राथमिक स्तर पर कक्षा 3 से 5 तक एक विषय पद्धति अपनाते हुए पर्यावरण अध्ययन (ई.वी.एस.) को दो भागों-भाग-1 (विज्ञान) और भाग-2 (सामाजिक विज्ञान) के द्वारा पढ़ाने की संस्तुति की गई। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए कि बच्चे अपने पर्यावरण को पूर्णत: समझते हैं, सत्र 2000 से इसे प्राथमिक स्तर पर एक समेकित विषय के रूप में पढ़ाने की संस्तुति की गई, जिसे राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 ने भी जारी रखा। इसके अंतर्गत कक्षा 3 से 5 तक पर्यावरण अध्ययन एक पृथक् विषय तथा कक्षा 1 और 2 में पर्यावरण संबंधित कौशल एवं सरोकारों को भाषा एवं गणित के माध्यम से संबोधित करने की संस्तुति की गई। इनमें दिए गए उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बाल-केंद्रित शिक्षण अधिगम प्रक्रियाएँ अपनाने पर बल दिया गया है तथा विभिन्न कौशलों का विकास करते हुए ज्ञान सृजन की बात कही गई है।

* *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

क्या है पर्यावरण और पर्यावरण अध्ययन (ई.वी.एस.)?

पर्यावरण में हम और हमारे चारों ओर की चीज़ें शामिल हैं, यानि इसमें केवल प्राकृतिक ही नहीं परंतु मानव निर्मित ढाँचे भी शामिल हैं। तो क्या पर्यावरण अध्ययन एक तरह का परिस्थिति विज्ञान है या फिर इससे कहीं अधिक? क्या यह एक विषय है या एक पद्धति? यह पर्यावरण विज्ञान एवं पर्यावरणीय शिक्षा से किस तरह भिन्न है? इन सभी सवालों का उत्तर जानना बहुत आवश्यक है। अकसर शिक्षकों से बातचीत में यह पता लगता है कि वे पर्यावरण अध्ययन को हमारे आसपास के प्राकृतिक वातावरण (जिसमें मुख्यत: पेड़-पौधे, जीव-जंतु एवं स्वयं मानव) की जानकारी एवं रखरखाव को ही समझते हैं। ऐसा करने के लिए पुस्तक में दिए गए पाठों की बच्चों को जानकारी, जिन्हें टीचर या बच्चे पाठ को पढ़कर व उससे जुड़े प्रश्नों के उत्तर लिखवाकर करा दी जाती है। किसी क्रियाकलाप या गतिविधि को करवाना अकसर अधिक समय लगने वाली के रूप में लिया जाता है जिसे या तो शिक्षक करवाने में बहुत रुचि नहीं रखते क्योंकि इसके लिए अधिक मेहनत या कई बार बच्चों का संपूर्ण सहयोग नहीं मिलने जैसे कई कारण बताए जाते हैं या फिर शिक्षक ऐसी गतिविधियाँ सोच पाने में असमर्थ होते हैं जो कि संदर्भित एवं उपयोगी हों।

पर्यावरण अध्ययन या ई.वी.एस. वास्तव में क्या है और क्यों इसे एक core area के रूप में प्राथमिक स्तर पर लिया गया है ऐसा जानना बहुत ज़रूरी है। आज से कुछ दशक पूर्व हमारी शिक्षा प्रणाली में पर्यावरण अध्ययन नामक विषय नहीं था। कई सालों से विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की सभाओं, दस्तावेज़ों द्वारा भी इसे पढ़ाने की बात कहे जाने पर भी विभिन्न राज्य/केंद्र शासित प्रदेशों में या तो विज्ञान या फिर पर्यावरण विज्ञान के नाम से इसे शुरू किया गया है। कुछ राज्यों में तो आज भी पर्यावरण विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान जैसे दो विषय अलग-अलग पढ़ाए जा रहे हैं।

दरअसल पर्यावरण अध्ययन में पर्यावरण, विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान का समावेश है। परंतु पर्यावरण विज्ञान, विज्ञान से जुड़े विभिन्न विषयों की शृखंला को अपने अंदर सम्मिलित करता है। यह इन विषयों के सार को संकलित करके प्राकृतिक वातावरण तथा उसके भौतिक, रासायनिक एवं जैविक तत्वों की पारस्परिक क्रियाओं को व्यवस्थित रूप में समझने तथा संचालित करने में सहायता करता है।

दूसरे शब्दों में यह विषय मानव गतिविधियों के विभिन्न तंत्रों पर प्रभाव का आकलन कर उनके पुन: स्थापन के लिए रणनीतियों के निर्माण में सहायक होता है। यद्यपि पर्यावरण अध्ययन संबंधित विषयों के तार्किक बोझ के बिना एक पद्धति है जिसका उद्देश्य पर्यावरण के प्रति एक सकारात्मक सोच एवं इसके साथ-साथ सरोकार पूर्ण परिप्रेक्ष्य का निर्माण है। संपूर्ण जगत के जीवित एवं अजीवित तत्व के आंतरिक एवं पारस्परिक संबंधों की समझ बनाते हुए पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति सचेतता,

संवेदनशीलता उन्हें सुलझाने का कौशल एवं भविष्य में उनकी रोकथाम करने की क्षमता का विकास करना भी पर्यावरण अध्ययन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

पर्यावरण अध्ययन एवं एकीकृत परिप्रेक्ष्य

हम सभी जानते हैं कि बच्चे अपने परिवेश में पलते-बढ़ते हुए नाना प्रकार के अनुभवों को ग्रहण करते हैं। यह पूर्व ज्ञान नए ज्ञान के सृजन तथा विकास के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है। किसी भी तरह के ज्ञान को बच्चे टुकड़ों में बाँटकर नही सीखते, परंतु उसे संपूर्ण एवं समग्र रूप में ग्रहण करते हैं। उदाहरण के तौर पर किसी तितली को देखकर वे उसके पंखों व रंगों की सुंदरता, उसके पंखों पर बने डिज़ाइन एवं उनकी symmetry को देखते हैं न कि उस एक कीट (जैविक ज्ञान), न ही उस पर की गई कविता, कहानी (भाषा) आदि में बाँट कर देखते एवं सीखते हैं। आसमान में आए बादलों को देखकर उनके रंगों, आकृतियों, उनका बनना, आकाश में तैरना, बरसात करना आदि से जुड़े कई सवाल उनके विचार में आ सकते हैं। जिनके उत्तर विभिन्न विषयों के ज्ञान के इस्तेमाल द्वारा मिलेंगे। परंतु एक शिक्षक होने के नाते हमें ऐसे सवालों को प्रोत्साहन देते हुए अधिगम के ऐसे भरपूर अवसर बच्चों को उपलब्ध कराने चाहिए जिनसे उनकी उत्सुकता तथा जिज्ञासा बढ़े।

इसी प्रकार पर्यावरण अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए, अधिगम के ऐसे चुनिंदा अवसर होने चाहिए जो बच्चों का ध्यान उनके परिवेश से जुड़ी समस्याओं की ओर आकर्षित करे। यह जानते हुए कि इस विषय का अधिगम कक्षा की चारदीवारी या उन पर आधारित पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित नहीं होता अपितु स्कूली ज्ञान बच्चों को बाहरी दुनिया से जोड़ने की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी का काम करता है। स्कूली शिक्षा के विभिन्न विषय इस ब्रह्मांड या संसार को समझने में हमारी सहायता करते हैं, परंतु वर्तमान शिक्षा प्रणाली को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि हम शिक्षा के नहीं, विभिन्न विषयों को पढ़ाने के मौलिक उद्देश्यों से भी काफ़ी विचलित हुए हैं। शिक्षक किसी भी विषय को पढ़ाने के लिए उसे तथा उससे जुड़ी पाठ्यसामग्री को एक अलग ज्ञान-भंडार के रूप में लेते हैं और इन्हीं धारणाओं के साथ अपनी शिक्षण पद्धति का इस्तेमाल करते हैं। सवाल यदि उस विषय से संबंधित न हो तो अकसर टीचर तुरंत टका-सा जवाब बच्चों को देते हैं कि मैं विज्ञान का शिक्षक हूँ, गणित या सामाजिक विज्ञान का नहीं, या यह सवाल इस विषय से संबंधित नहीं है।

जबकि हम सब जानते हैं कि पर्यावरण को किसी एक विषय की बपौती न होकर, भिन्न-भिन्न विषयों के सीमित प्रभागों में नहीं बाँटा जा सकता। यह सभी विषय पर्यावरण तथा उससे जुड़े तथ्यों एवं मुद्दों को समझने में सहायक होते हैं।

उदाहरण के तौर पर तरह-तरह की मिट्टी एवं जलवायु भूगर्भ विज्ञान द्वारा, उसमें पाए जाने

वाले पेड़-पौधे, जीव-जंतु या फ़सल आदि को जैविक ज्ञान द्वारा, मिट्टी या वायु के तत्त्व, रासायनिक ज्ञान द्वारा, मिट्टी की परत की गहराई, क्षेत्रफल आदि का गणित द्वारा अध्ययन किया जा सकता है। किसी खास क्षेत्र में होने वाली समस्याओं जैसे मिट्टी का कटाव, विभिन्न प्रजातियों का लुप्त होना, बाढ़ आना आदि पर समझ और उनका निवारण इन सभी विषयों की समझ द्वारा ही किया जा सकता है। लेकिन इस सब के लिए हमें वहाँ के प्राकृतिक ही नहीं बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं पर भी अपनी समझ बनानी होगी। क्या नई फैक्ट्रियों का लगना, जंगल तथा उन पर अपना जीवन निर्वाह करने वाले व्यक्तियों को प्रभावित कर रहा है? क्या जंगल के कटने से मिट्टी का कटाव व बाढ़ बढ़ गई है? क्या फैक्ट्री लगना लोगों को रोज़गार दे रहा है? इन सब से किन लोगों का जीवन किस-किस तरह प्रभावित हो रहा है? इन सभी मुद्दों पर समझ बनाने के लिए विज्ञान, सामाजिक विज्ञान को एकीकृत रूप से देखने से एक अच्छी समझ का विकास हो सकता है। पर्यावरणीय मुद्दे देखने में बहुत जटिल होते हैं। इन्हें समझने तथा तह तक जाने के लिए विभिन्न विषयों का ज्ञान ज़रूरी है। इसलिए यह और भी महत्वपूर्ण है कि यदि हमें पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति करनी है तो इन मुद्दों को अलग-अलग विषयों द्वारा न समझाकर, एक एकीकृत परिप्रेक्ष्य में लिया जाना चाहिए। इसके लिए विषयों की दीवारों को तोड़ना तथा उनकी पारंपरिक सीमाओं को लाँघना अति आवश्यक है। इसीलिए पाठ्यक्रम तथा उसमें चुने गए विषय एवं उप-विषय इस प्रकार से हों जिनके संप्रत्यय और उप-संप्रत्यय को विभिन्न विषयों में न बाँटा जा सके बल्कि एक समग्र रूप में देखते हुए ऐसी ही पाठ्यसामग्री भी विकसित की जा सके।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या-2005 पर आधारित पर्यावरण अध्ययन कक्षा 3 से 5 तक का पाठ्यक्रम तथा इसमें दी गई छह विषयवस्तुओं को ध्यानपूर्वक देखिए। देखें! क्या सोच पाए? क्या यह विषयवस्तु (थीम) एकीकृत पहलू दर्शाती है? यदि हाँ तो कैसे?